

Snehal Sindhu



Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 012 Issue 07 JULY 2026 Pages 24 A.S. Rs 100



Guru Smruti Bhakti Mahotsav at Paris



सत्संग समाचार







P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Megarugas Hall, Chandivali

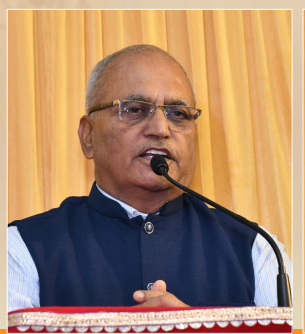
❊ गुरुहरि काकाजी महाराज के दिव्य मानस सपूत और सभी गुणातीत स्वरुपों एवं हरिभक्तों के लाडले प.पू. वशीभाई का ७४वाँ प्रागट्यदिन **Megarugas Hall**, चांदिवली में शनिवार, दि. ४ जुलाई को दिल्ली से प.पू. सुहृदस्वामीजी और संतो, प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनों, गुणातीत ज्योत से पू. भावनाबहन अमीन, पू. साधनाबहन और अन्य संतबहनों, पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों, गुजरात-मुंबई-महाराष्ट्र से तथा स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

इस समारोह का मुख्य विषय - 'दासना दास बनाववा तें मांड्यो छे आ रास, तेमां आपवो साथ तने मूकीने स्वभाव...' रखा गया था।

माहात्म्यदर्शन की श्रृंखला में सबसे पहले प.भ. काव्यभाई पटेल, प.भ. मनविन ट्रीखा (अटवाल), प.भ. दिपकभाई जहागीरदार, वशीभाई के पूराने मित्र **Advocate** श्री. मंगल भंडारेजी, प.भ. जे.पी. मल्होत्राजीने स्वानुभाव के प्रसंगो बताकर महिमागान किया।













P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Megarugas Hall, Chandivali

Advocate श्री. मंगल भंडारेजी और Advocate श्री. राणेजी का संतभाईयोंने खेस और स्मृतिभेट देकर अभिवादन किया।

प.भ. मनाक्षभाई, प.भ. चिन्मयभाई महेता, प.भ. ओमभाई मोहिते और प.भ. संकेतभाई खैरेने वशीभाईने उनके जीवन में जो कार्य किया उसकी छोटी झलक Group Discussion द्वारा कराई। उसके बाद पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य में जो प्रगति हुई है उसकी छोटी झलक Video के माध्यम से सभीने देखी।

प.भ. कैलाशभाई टंडेल द्वारा रचित वशीभाई के जीवन तथा कार्य पर आधारित AI Video का सभीने दर्शन किया।



प.पू. सुहृदस्वामीजी ने कहा कि करीब ४६ साल से मैं गुरुजी के साथ जुडा हुआ हूँ। सन् १९८२ में पहलीबार तारदेव मंदिर आया था तब गुरुहरि काकाजी के दर्शन हुए थे तब पवई के ९ योगेश्वरों के दर्शन किये थे। वशीभाई को तब महापूजा करते हुए देखा था। वो स्मृति आज भी तादृश है। हरिभक्तों के सुख-दुःख या कोई भी तकलीफ हो उसके लिये वे महापूजा में खास प्रार्थना करते है। वही उनकी सच्ची महिमा है। अगले साल उनका हम अमृत महोत्सव मनानेवाले है। तो हमारी जो कसर हो उसे टालकर उन्होंने हमारे लिये जो परिश्रम किया है उसके मुताबिक हम सत्संग में आगे बढे और वे काकाजी के लाडले है वैसे हम उनके लाडले बन जाये वही प्रार्थना।



शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि वशीभाई के जो भी दर्शन करता है उसके दिल में वो बैठ जाते है। वे गुरुजी के Darling है। वशीभाई छोटी सी घटना को भी चमत्कार में बदल देते है। सभी गुणातीत स्वरुपों से लेकर छोटे भक्त के साथ उनका अनोखा संबंध है। उनकी मुख्य वातें मैं बताता हूँ। (1) Think Globally and act locally. (2) Every success is a responsibility and every failure is a learning. (3) Courtesy becomes custom and custom becomes law. (4) Vision gets converted in the reality. (5) Vision into Mission and Mission into objective and objective into reality. आज हमारे गुणातीत समाज के सभी केन्द्रो जो कार्य मिलकर कर रहे है वह काकाजी Vision था। यावत्चंद्रदिवाकरौ की तरह काकाजी का महिमा हमेशा ऐसे बढता रहेगा। तो वैसे हमें हरपल अक्षरधाम के सुख का आनंद लेते रहना है। अक्षरधाम का सुख यानि शुभ विचार और सभीके प्रति प्रार्थना तथा दिव्यभाव रखना। तो ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति हम करते रहे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि इतनी बारिश में भी सभी दूर-दूर से आज यहाँ पधारे उससे यह साबित होता है कि सभीको वशीभाई से बहुत प्रेम है। वशीभाई के जीवन में तीन बात मुख्य है। (१) दासत्वभक्ति - ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी कहते थे कि दासत्वभक्ति उच्च कक्षा की भक्ति है। निजात्मानं ब्रह्मरुपं के बराबर दासत्वभक्ति मानी जाती है। वशीभाई जहाँ जो भी परिस्थिति में भगवान रखें वहाँ वे Adjust हो जाते है। तारदेव मंदिर में रहकर CA करना वह सबसे बडी चुनौती थी। बडे ऑफिसर होने के बावजुद सभीके साथ दास बनकर रहते है। (२) सुहृदभक्ति - किसीको कोई भी तकलीफ आती है तो उसमें उसे कैसे सहायरुप होना वह उनकी सबसे बडी भक्ति है। व्यक्ति बाहर का हो या अन्य संस्था का हो, हर किसीको मदद करने वे हमेशा तत्पर रहते है। छोटे छोटे बच्चों को भी पढाई में आगे बढने मार्गदर्शन देते रहते है। वैसे वे सभीके सहृदयी है। (३) निर्दोषभाववाली भक्ति - काकाजी भगवान का स्वरुप है और उनके लिये सबकुछ न्योछावर है ऐसी निर्दोषबुद्धि से वे काम करते है। कोई भी प्रसंग बने उसमें उपाय ढूँढ लेना वह उनमें सहज है। तो हे काकाजी! वशीभाई की सेहत हमेशा अच्छी रहे और वो राजी हो ऐसा हमारा जीवन बने वही प्रार्थना।



प.पू. वशीभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज हमारी चेतना को देखते है। बिल्डींग खडा करना मुश्किेल नहीं है, लेकिन पवई मंदिर का जो नूतनीकरण का कार्य चल रहा है उसके लिये आध्यात्मिकता हमारे जीव में दृढ होनी ज्यादा जरुरी है। आज के समाज में अच्छे संस्कार की आवश्यकता है। हमें ऐसे जीवन जीना है कि काकाजी प्रगट ही रहें। सभी हरिभक्तोंने अपनी क्षमता से भी ज्यादा सेवा इस पवई मंदिर के कार्य में की है उसके लिये बहुत धन्यवाद है। काकाजी कहते थे कि सामनेवाले कोई भगवान के आश्रित हो हमें उसका काम करना है। तो हे काकाजी! जिसको जो भी तकलीफ हो उसे आप दूर करके सभीको सुखी करना वही प्रार्थना।



पवई की सभी संतबहनों की ओर से विशिष्ट हार वशीभाई को संतभाईयोंने पहनाया।

अन्य केन्द्रो की ओर से वशीभाई को हार तथा भेट अर्पण हुए।

प.भ. मितेशभाई और सभी युवकोंने पूरे कार्यक्रम की अच्छी व्यवस्था की।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग भी हुआ।

ऑस्ट्रेलिया मंडलने भी वशीभाई का प्रागट्यदिन भक्तिभाव पूर्वक मनाया। साथ ही MESO Company के भागीदार श्री. केतनभाई शाह तथा HR कु. नीताबहन दोशी एवं सभी कर्मचारीओं की हाजरी में केक कटिंग के साथ उनका प्रागट्यदिन आनंदपूर्वक मनाया गया।





P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Megarugas Hall, Chandivali











P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration in MESO







P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar















❊ शुक्रवार, (दि. २७ जून) को संभाजी नगर में पवई के संतभाईयों, संतबहनों और कई हरिभक्तों तथा महानुभावों की हाजरी में प.पू. वशीभाई का ७४वाँ प्रागट्यदिन 'जेणे जोया अेनी मूर्ति मनमां वसी...' विषय पर उत्साहपूर्वक मनाया गया।

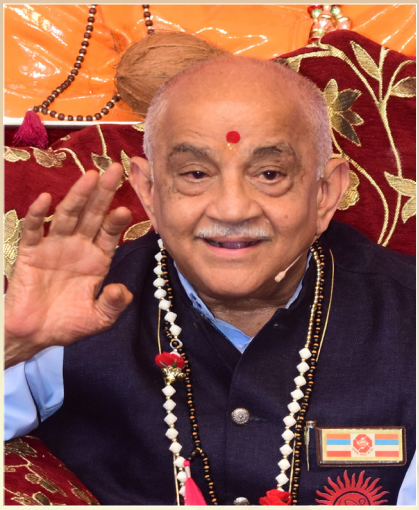
प्रारंभ में पुष्पों द्वारा सभी संतभाईयों और संतबहनों का स्वागत किया। उसके बाद युवतीयोंने भावनृत्य प्रस्तुत कर वशीभाई के चरणों में अपना भाव रखा। संभाजी नगर के युवाओंने विशिष्ट सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर वशीभाई के चरणों में अपना भाव रखा।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. सपनाबहन पडालकर, प.भ. छायाबहन, प.भ. शिल्पाबहन मूले, पू. कुसुमताई, प.भ. चित्राबहन जहागीरदार और पू. अक्षयदासने वशीभाई के विशिष्ट गुणों का स्वानुभाव के प्रसंगो द्वारा दर्शन कराया।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि वशीभाई के जीवन में देखे तो हम युवक सभा में कांदिवली में पहलीबार मिले। सन् १९७३ में गुरुहरि काकाजी परदेश गये तब 4 Point Programme करने



की आज्ञा की थी, तो हम दोनोंने मिलकर वह किया। वे मुझे बताते थे कि मैं गांव जाता था तब मेरी दादी के कहने पे मैं पूजा की सामग्री रखता था। फिर तारदेव आ गये और काकाजी महाराजने भी उन्हें महापूजा करने की आज्ञा दी। तो ऐसे काकाजी चेतना को पहचान जाते है। भक्ति का सहज दर्शन वशीभाई में होता है। ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी कहते थे कि वशीभाई महापूजा करते है तो ब्र.स्व. योगीजी महाराज जो महापूजा करते थे वो सहज याद आ जाता है। हरिधाम से एक मंडल मुंबई Visa के लिये आया था तब स्वामीजीने उन्हें कहा कि आप सब पहले तारदेव में वशीभाई की महापूजा में जाना तो आपको Visa सहज मिल जायेगा। तो सचमुच सभी हरिभक्तों को तळीर मिल गया। तारदेव मंदिर के समय से महापूजा निरंतर चालु ही है। ठाकोरजी के लिये भी नया-नया कुछ दर्शन हो उसके लिये पूजारी को मार्गदर्शन देते है। उसमें बहुत जाग्रतता रखनी पडती है। वैसे सत्संग में भी पारायण या वचनामृत की सभा करनी हो तो बहुत ज्यादा Research करते है ताकि हमें सरल ज्ञान दे सके। वो जो भी कार्य करते है उसमें डूब जाते है। ऐसे हम जो भी करें उसमें पूरा डूब जाये और सभी सुखी रहे वही प्रार्थना।



प.पू. वशीभाई ने आशीष देते हुए कहा कि हम बहुत भाग्यशाली है हमें प्रगट गुरु सहज में मिल गये। भरतभाई जैसे ठाकोरजी आशीष देते है वैसे आज हमारी तरफ से महाराज के चरणारविंद सभीको भेट में देंगे। माता-पिता को खास प्रार्थना है कि बच्चों को अच्छे संस्कार दे। सत्संग वो काम करता है, लेकिन उसके लिये हमें उन्हें सत्संग की सभा में जूडे रखना। आज पूरे विश्व में जो कुछ घटना हो रही है उसमें न जाकर हमें सत्संग के मार्ग में आगे बढना है। आज की युवापेढी को ये संदेश है कि Remain relevent to the enviorment. आज के समय के साथ नया-नया सीखते रहना चाहिए। इसलिये काकाजीने कहा कि सत्संग में दो भगवदी और दो हरिभक्त के साथ मैत्री करो। उसका दर्शन हमें दिल्ली मंडल में होता है। गुरुजीने पूरा परिवार वहाँ खडा कर दिया है। हमें आपस में आत्मबुद्धि और प्रीति बढानी है। काकाजीने तो इतना सरल बना दिया कि केवल धुन करो तो भी हमारा काम हो जायेगा। तो यहाँ के हरिभक्तों को जो भी तकलीफ हो, वह महाराज दूर करें और सुखी रखें वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि वशीभाई यानि गुरुहरि काकाजी के बचुडिया, स्वामीजी के प्यारे और गुरुजी के Darling है। वशीभाई के हरपल चमत्कारीक होते है। आज





P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

बाल मंडल के लिये वे कुछ ना कुछ नया करते रहते है। बडेपुरुष के वचन से जो भी होता है वह दिव्य हो जाता है। काफी समय से वे MESO से जुडे है। जैसे आज AI की वजह से सभी काम बहुत तेजी से बढ गये है, वैसे वशीभाई गुणातीत AI है जो आध्यात्मिकता के साथ व्यवहार के कार्य में तेजी से बढने की





P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

समझ देते रहते है। समय के साथ आज हमें बदलना बहुत जरुरी हो गया है। तो हम आध्यात्मिकता में आगे बढते रहे वही प्रार्थना।

कोर्पोरेटर श्री. दिलीपभाई थोरातजी उनके परिवार के साथ पधारे थे और वशीभाई को प्रागट्यदिन निमित्त भेट भी दी। महानुभावों में श्री. दत्ताभाईने सभी संतभाईयों को शाल अर्पण करके उनका अभिवादन किया। कोर्पोरेटर श्रीमती अमृताबहन का भी अभिवादन हुआ।

संभाजी नगर मंडल की ओर से विशिष्ट हार हरिभक्तोंने वशीभाई को अर्पण किया।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुआ।



*** मंगलवार, दि. ७ जुलाई को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में विशिष्ट भजन संध्या दिल्ली से प.पू. गुरुजी और संतों, प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनों, पवई के संतभाईयों, संतबहनों तथा कई हरभिक्तों की उपस्थिति में मुंबई के भारतीय विद्याभवन हॉल में भक्तिभाव से मनाई गई।**



Bhajan Sandhya at Bhartiya Vidhya Bhavan Hall, Girgaon Chowpatty

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि इस प्रसादिक हॉल में गुरुहरि काकाजी से लेकर सभी गुणातीत स्वरुपों पधारे है, इसलिये हम बहुत भाग्यशाली है। गुरुजी के सानिध्य में आज ये भजन संध्या हुई वह बहुत बडी बात है। गुरुजी दिल्ली से करीब ७५ हरिभक्तों को लेकर आये उसकी बहुत खुशी है।



भक्तों की खुशी के लिये गुरुजी बहुत विचरण करते है उसके लिये उनका जितना धन्यवाद दे उतना कम है। वशीभाई के प्रागट्यदिन निमित्त करीब १० महिने के बाद गुरुजी ऐसे बाहर निकले है। तो उससे पता चलता है कि उनको वशीभाई के प्रति कितना प्रेम है। काकाजी के हीरक महोत्सव पर पागेजीने कहा था कि काकाजी सचमुच साक्षात्कारी पुरुष है। बहुत सारे लोगों के बीच उनको कथा करते देखा है और रामतीर्थ की मिटिंग में बर्तन धोते हुए भी देखा है। दोनों वक्त उनका समत्वभाव देखा है। ऐसी काकाजी की बहुत सारी स्मृतियाँ है। गुणातीत ज्योत के एक भजन 'बन्या खूब गरजू...' की एक पंक्ति – 'खुल्ला पाने रमो छो, तोय तमे जीतो छो, सर्वस्व सहुनुं लईने, सर्वस्व सहुने द्यो छो...' ऐसे काकाजी थे। बडे सत्पुरुष मिले तो उनके वचन मुताबिक जीवन जीयेंगे तो फायदा ही होगा। आज हमें गुरुजी का ऐसा दर्शन हो रहा है तो हमें साक्षात्कार हो गया। ऐसे स्वरुपों से बात करेंगे तो ही काम होगा ऐसा नहीं है, केवल दर्शन भी करेंगे तो भी हमारा काम होगा। यहाँ से आज की सभा की स्मृति लेकर जायेंगे तो हम अखंड अक्षरधाम में है ऐसा सुख महसुस होगा। तो निर्दोषबुद्धि और महिमा से प्रगट स्वरुपों से हम जुडे रहें वही प्रार्थना।

भारतीय विद्याभवन के स्थापक और अत्यंत विद्वान तथा सक्षम राजकारणी पुरुष श्री. कनैयालाल मुनशी और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती मुनशी के पौत्र कीर्तिदेवभाई का संतभाईयोंने खेस और स्मृतिभेट अर्पण करके अभिवादन किया।





Bhajan Sandhya at Bhartiya Vidhya Bhavan Hall, Girgaon Chowpatty









Bhajan Sandhya at Bhartiya Vidhya Bhavan Hall, Girgaon Chowpatty

कल्याण मंडल की ओर से वशीभाई को प्रागट्यदिन निमित्त भेट अर्पण हुई।

❊ बुधवार, दि ८ जुलाई को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में प.पू. आनंदीदीदी और संतबहनें पधारे थे। पवई के संतभाईयों, संतबहनोंने उनका स्वागत किया, सभा हुई, सभीने सत्संग और आशीर्वाद का लाभ लिया।





P.P. Aanandididi and Saint Sisters at "Akshardham" Temple, Powai

❊ शनिवार, दि ११ जुलाई को गुणातीत प्रकाश के पू. इलेशभाई, पू. विजयभाई और संतभाईयों 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई पधारे थे। वे संतभाईयों से मिले और पवई मंदिर के नूतनीकरण की जानकारी प्राप्त करके धुन की।



With P. Ileshbhai and P. Vijaybhai at Powai Temple

❊ रविवार, दि १२ जुलाई को Senior Citizens के लिये Preventive Healthcare को आगे बढाने के इरादे से 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में मुफ्त Flu Shot (Influenza Vaccination) का आयोजन किया गया था। इस अभियान में करीब ५० Senior Citizens ने हिस्सा लेकर इसको सफल बनाया। Sion Hospital के डॉ. जयराजभाई नायरने पूरे Camp का अच्छे से आयोजन किया





Preventive Healthcare Flu Shot Camp for Senior Citizens at "Akshardham" Temple, Powai

और साथ में डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्टने उन्हें साथ भी दिया। डॉ. जयराजभाई और डॉ. महेन्द्रभाईने इस Camp की विशेषता सभीको समझाई और प.पू. वशीभाईने सभीको आशीर्वाद दिये और उनका अभिवादन किया।

❊ शनिवार, दि १८ जुलाई को कर्जत में योगी डिवाईन सोसायटी, सद्भाव फाउन्डेशन और रोटरी क्लब द्वारा ग्रामीण स्कूलों में बच्चों को Stationary Kit के साथ 600 Bags का वितरण किया गया। जुगरेवाडी गांव में जिल्ला परिषद (ZP) Primary और Higher Primary स्कूलों में भी जरुरतमंद छात्राओं को Stationary Kit और 78 Bags बाँटे गये। साथ ही अंगनवाडी के छोटे बच्चों को खेल के साधन से शिक्षण का विकास करने खिलौनें का वितरण किया। शुद्ध पर्यावरण को बढावा देने तथा पेड का महत्व बताते हुए पेड-पौंधों का भी वितरण हुआ। इससे लोगों को पेड लगाने तथा उनकी सही देखभाल करने का प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। इस कार्य का मुख्य हेतु परिसर को शुद्ध, हरा-भरा रखने में मदद मिले यह था। पवई की संतबहनोंने स्वयं पेड लगाकर सभीको मार्गदर्शन दिया। मेंगलवाडी तथा रायगढ गांव में पेड-पौंधों का वितरण हुआ। इस कार्य में सद्भाव फाउन्डेशन की कु. नीताबहन दोशी, योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से पू. मीनाबहन, पू. आरतीबहन, पू. संदीपदासजी और प.भ. समाधानभाई और प.भ. जिज्ञाबहनने सभी कार्य अच्छे से सँभाले।





Social Services at Karjat Villages

❊ रविवार, दि १५ जुलाई को लंडन में AUM Cremetorium का उद्घाटन, मंत्र दीक्षा हीरक महोत्सव और प.पू. अश्विनभाई का प्रागट्यदिन तथा पेरिस में गुरुस्मृति भक्ति महोत्सव एवं गुरुहरि काकाजी महाराज के १०८वे प्रागट्य महोत्सव तथा समूह महापूजा निमित्त प.पू. भरतभाई, पू. अश्विनभाई, पू. आनंददास और पू. कृपाबहन लंडन और पेरिस की धर्मयात्रा के लिये दि. ११ जुलाई को मुंबई से रवाना हुए। लंडन से पू. किशोरभाई मास्टर्स भी उनके साथ जुडे।





With P.B. Sharadbhai, Leicester



At P.B. Shardaben Unnadkat Sister's Place, Leicester



At P.B. Surubhai's place, UK



At P.B. Vatsalbhai's place, UK



At P.B. Rambhai Sidhpura's place, UK



Visit at Aum Crematorium construction site

शुरुआत में लंडन में कई हरिभक्तों के घर पधरामणी करके सत्संग किया। प.भ. अशोकभाई राठोडने भी उनके साथ सभी जगह पधारकर अपनी सेवा अर्पण की।

दि. १४ जुलाई को प.पू. वशीभाई भी उनके साथ जुडे। साथ ही पू. मननदास तथा पू. संकेतदास इस महोत्सव में हिस्सा लेने लंडन पहुँचे। दि. १५ जुलाई को लंडन में त्रिवेणी संगम महोत्सव का प्रारंभ हुआ। प्रथम दिन Opening session of AUM Cremetorium का उद्घाटन हुआ। 'मंत्रदीक्षा हीरक महोत्सव', अनुपम मिशन सुवर्ण जयंती महोत्सव तथा प.पू. अश्विनभाई का ८५वाँ प्रागट्योत्सव आनंदोत्सव के साथ मनाया गया। साथ ही Exhibition and Souvenir Shop का उद्घाटन संतभगवंत साहेबजी तथा वैष्णवाचार्य पू. गोस्वामी १०८ श्री व्रजकुमारजी महोदयश्री द्वारा हुआ। इस महोत्सव में कई महानुभावों पधारे थे। प्रारंभ में साहेबजी, अश्विनभाई और सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार प.पू.श्री. भूपेन्द्रभाई पंड्या का विशिष्ट रथ में सभामंडप में आगमन हुआ। दीपप्रागट्य के साथ इस समारोह का प्रारंभ हुआ।

Inauguration of Aum Crematorium, London











भूपेन्द्रभाई पंड्या केवल ४ दिन के लिये अपने केनेडा के कार्यक्रम को स्थगित करके इस महोत्सव में पधारे इसलिये साहेबजीने अत्यंत प्रसन्नता दर्शायी।

दि. १६ को International Youth Session और कीर्तन आराधना का आयोजन किया गया था।

Denham की पवित्र भूमि पर आध्यात्मिकता के इतिहास में पहलीबार इतना भव्य कार्य हुआ। पहले लंडन में हिंदु स्मशान भूमि के लिये बहुत प्रयत्न किये गये थे, लेकिन वहाँ की सरकारने मान्यता नहीं दी थी। जब साहेबजीने इस कार्य की जिम्मेदारी ली और उनके आशीष से तथा प.भ. सतीशभाई चटवाणी तथा उनके साथ पू. हिंमतस्वामीजी, पू. भाविशाबहन टेलर तथा साथीओंने जो परिश्रम किया एवं सभी हरिभक्तोंने अत्यंत तीव्रता से भजन किया उसके फलस्वरुप लंडन में और वो भी अनुपम मिशन मंदिर के बाजु में ही स्मशान

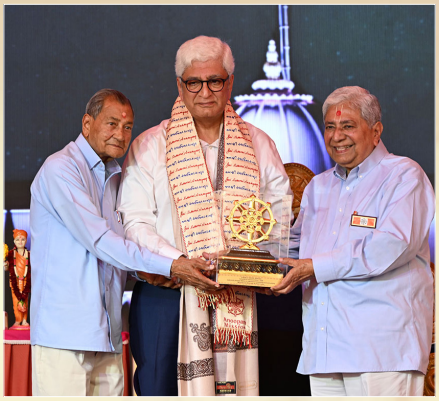


Inauguration of Aum Crematorium, London













भूमि के लिये जो आयोजन हुआ, उससे सभी संस्थाएँ और उनके मान्य कार्यकर्ताओं बहुत ही प्रसन्न हुए और सभीने अपनी अपनी तरह से इस कार्य में योगदान दिया। मानो की एक चमत्कार ही हो गया। समग्र युरोप में यह पहली ही हिंदु स्मशान भूमि – AUM Cremetorium ने साकार स्वरुप धारण किया। यह समाचार मिलने से प.पू. महंतस्वामीजी अत्यंत राजी हुए और आशीर्वाद दिये। इस समारोह में दिनकरभाईने आशीष दिये और भरतभाई, वशीभाईने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया।

दि. १७ जुलाई को शालीन मानवरत्न का आयोजन किया गया था। जिसमें श्री. योगेशभाई मेहता, श्री. विनोदभाई कोटेचा, श्री. रुपिनभाई वडेरा, श्री. सामजीभाई पटेल और डॉ.श्री. अभिजातभाई शेठ शामिल थे।

इस समारोह का मुख्य विषय 'भजन करता करता क्रिया करीऐ...' रखा गया था। करीब २६० से ज्यादा कलाकारोंने सांस्कृतिक कार्यक्रम द्वारा भक्ति और सेवा का महत्व बताया। इस कार्यक्रम का मंगल प्रारंभ अनुपम मिशन, लंडन की युवती मंडल द्वारा गणेश वंदना नृत्य से हुआ। अनुपम मिशन का लंडन जैसे देश में आध्यात्मिक विकास, ऐतिहासिक यात्राओं, गुरु आज्ञापालन, अविरत धुन-भजन, श्रद्धा और प्रभु के बल से अशक्य कार्य शक्य होना जैसे मुद्दों को ध्यान में रखा गया था। पूरे कार्यक्रम में सर्जनात्मकता, भक्तिभाव,

Inauguration of Aum Crematorium, London













संप, सुहृदभाव और एकता का दर्शन हो रहा था। जिसकी परिकल्पना साहेबजी के सानिध्य में हुई। Canada और Europe के इन हरिभक्तोंने संगीत, नृत्य, अभिनय और आधुनिक Technology के समन्वय से अपना भाव प्रगट किया और साहेबजी के विशिष्ट आशीर्वाद प्राप्त किये। साहेबजी की परिकल्पनानुसार पूरे कार्यक्रम का लेखन और दिग्दर्शन की सेवा पू. धनंजयभाईने इतने अच्छे से की जिससे साहेबजी और सभी महानुभावो तथा श्रोतागण बहुत प्रसन्न हुए।

इस उपलक्ष्य में पू.डॉ. निम्मीबहन तथा अमरिका के मिहिरभाई, राजवीभाई के परिश्रम से 'भगवुं हृदय' पुस्तक का अनावरण भी हुआ।

योगी डिवाईन सोसायटी संचालित 'अक्षरधाम' मंदिर पवई, दिल्ली तथा शिकागो की ओर से बहुत ही सुंदर प्रशस्ति पत्र साहेबजी को अर्पण किया गया।

पूरे कार्यक्रम का संचालन पू. भाविशाबहन टेलरने बहुत ही भक्तिभाव से सुंदर तरीके से किया। इस महोत्सव के उपलक्ष्य में मोगरी तथा लंडन के संतभाईयों तथा अमरिका से कईं युवक-युवतीयोंने सेवा के लिये समय निकालकर हिस्सा लिया जिससे यह कार्यक्रम अद्‌भुत तरीके से सफल रहा और साहेबजी तथा वडील सद्‌गुरुओं की अंतर की प्रसन्नता प्राप्त की। अश्विनदादा के प्रागट्यपर्व भी इसी समारोह में मनाया गया और उसमें सद्‌गुरु संत डॉ. मनोजभाई सोनीने अत्यंत भाववाही शैली में अश्विनभाई का माहात्म्यगान किया जिससे सारी सभा मंत्रमुग्ध हो गई।

❊ मंगलवार, दि. २१ जुलाई को कलगाम, गुजरात में प्रज्ञा प्रबोधिनी ट्रस्ट द्वारा नई तालीम शाला (Primary School) में शैक्षणिक सहायता के अंतर्गत स्कूल के प्रिन्सिपल श्री. नीलेशभाई पटेल, शिक्षक श्री. सेंदाजी ठाकोर तथा अन्य शिक्षकों के मार्गदर्शन से School Bags और Chocolates प्रदान हुए। योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से वापी मंडल के प.भ. रमणभाई, प.भ. दिनेशभाई, प.भ. रमेशभाई और प.भ. कैलाशभाई टंडेल तथा पवई से पू. माधुरीबहन, पू. मीनाबहन, पू. हर्षितदासजी, पू. संदीपदासजी, प.भ. अमोलभाई, प.भ. जिज्ञाबहन, प.भ. अर्चनाबहन, प.भ. साक्षीबहन,



Bags Distribution at Kalgam



Visit to Manor Temple, Kalgam

ने इस कार्यक्रम में सहभागी होकर इस सामाजिक कार्य को सफल बनाया।

उसके बाद पवई की संतबहनों तथा हरिभक्तोंने मनोर स्वामिनारायण मंदिर के दर्शन भी किये।

❊ गुरुवार, दि. २३ जुलाई को पेरिस में 'गुरुस्मृति भक्ति महोत्सव' के प्रथम दिन Espace Noisy Le Sec विशिष्ट समूह महापूजा का आयोजन हुआ।

ऐसे तो गुरुहरि काकाजी महाराज के १०८वे प्रागट्यदिन निमित्त १०८ युगलों को समूह महापूजा में हिस्सा लेने का आयोजन किया गया था, लेकिन सभीके भक्तिभाव तथा उत्साह से १२५ से भी ज्यादा युगलोंने इस समूह महापूजा में उत्साह, उमंग और भक्ति से भाग लिया।

इस महोत्सव का मुख्य विषय संप-सुहृधभाव-एकता रखा गया था। पूरी महापूजा तथा समैया के आयोजन में इसबार पेरिस के सभी युवा तथा युवतीओंने मिलकर किया एवं सभी वडीलों के बदले पूरी जिम्मेदारी तथा व्यवस्था उन्होंने सँभाली, इससे सभी गुणातीत पुरुष अत्यंत राजी हुए।



Samuh Mahapooja in Gurusmruti Bhakti Mahotsav, Paris



❊ सोमवार, दि. २४ जुलाई को गुरुहरि काकाजी महाराज का १०८वाँ प्रागट्यपर्व सभी संतभाईयों, शिकागो और पेरिस के कईं हरिभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. अमितभाई शाह, प.भ. प्रवीणभाई लाडने स्वानुभाव के प्रसंगो द्वारा अपना भाव काकाजी के चरणों में रखा।

पेरिस के कईं हरिभक्तोंने Video के माध्यम से काकाजी के साथ का अनुभव प्रस्तुत किया।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी कहते थे कि When in Rome, be Roman. वैसे यहाँ युवाओंने French भाषा द्वारा संचालन किया वह देखकर अच्छा लगा। सन् १९८४ में पहलीबार हम यहाँ आये थे। यहाँ सभी हरिभक्तोंने अपनी जिंदगी इस सत्संग के लिये न्योछावर कर दी। काकाजी यानि



Guruhari Kakaji Maharaj 108th Pragatya Din celebration, Paris



युग परिवर्तन करनेवाले स्वरुप थे। आज यहाँ काकाजी का १०८वाँ प्रागट्यपर्व मना रहे है। उसका रहस्य बताता हूँ। **(१)** माला में १०८ मणके होते है। वैसे काकाजी की मूर्ति का ध्यान करके माला करेंगे तो जरुर काम होगा। **(२)** उपनिषद १०८ है। **(३)** ७२ हजार नाडियाँ हमारे अंदर काम कर रही है। १०८ नाडियाँ ऊर्जा पेदा करती है। काकाजी को पूरा पहचानना मुश्किल ही नहीं, नामुनकीन है। लेकिन उन्होंने हमें जो Techniques दिये वो समझ जायेंगे तो उनकी सच्ची पहचान समझमें आयेगी। महेन्द्रबापु को खास याद करते है। यहाँ के मंडल को तैयार करने उन्होंने घर-घर जाकर सत्संग किया। काकाजीने एक सूत्र दिया था Live Dangerously. इसका मतलब पूराने विचारो को छोड दो। पप्पाजी कहते थे कि इसी पल धामरुप होकर जीयो। भूतकाल को छोडकर हमें वर्तमान में जीना सीखना है। काकाजीने खुद के साक्षात्कार से गुणातीत समाज में गुणातीतभाव में जीवन जीने की Techniques देकर हमें हमेशा के लिये सनातन बना दिया। तो हे काकाजी! सभी चैतन्यों को ब्रह्म के सुख से भर दे वही प्रार्थना।



प.पू. भरतभाई ने कहा कि यहाँ के हरिभक्तों काकाजी के सिद्धांत से जीवन जीते है। सालों से सभी हरिभक्तों सुबह के स्वरुपयोग से लेकर रात्रि की प्रायश्चिरुप प्रार्थना हररोज नियमित करते ही है। उसका परिणाम आज पेरिस जैसे देश में हम काकाजी का १०८वाँ प्रागट्यपर्व मना रहे है। काकाजीने हमें सिखाया कि हमेंशा सभीका अच्छा ही सोचो। हमारा कोई भी बुरा नहीं कर सकता। भगवान कर्ताहर्ता है और हमारे आसपास उनकी शक्ति काम करती है। काकाजी को सभी जादुकाका कहते थे। उनको सब दिखाई देता था, फिर भी हमारे साथ सामान्य होकर बनकर रहते थे। उन्होंने हमें बहुत कुछ दिया है, हमारी तो कोई कक्षा ही नहीं है। अंत में भजन की कडी 'हसतां-रमतां आनंद करता, तारा ताले ताल रहूँ...' गाकर उन्होंने अपनी प्रार्थना रखी।





प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी के प्रागट्यदिन पर मैं उनके प्रागट्य स्थान नडियाद में पहुँच जाता हूँ। सन् १९१८ में उनका प्रागट्य हुआ। उसकी विशेषता यह है कि ४ साल तक प्रथम विश्वयुद्ध जो शुरु हुआ था वह १९१८ में पूर्ण हुआ। उनका प्रागट्य विश्व में शांति लेकर आया। ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद से डॉ. नाथाभाई के घर काकाजी-पप्पाजी का प्रागट्य हुआ। बचपन से ही दूसरों को देने की भावना काकाजी के अंदर सहज थी। सन् १९३७ में काकाजी आफ्रिका गये थे। सन् १९३९ में दूसरा विश्वयुद्ध शुरु हुआ। वो पूरा हुआ और काकाजी का London School of Economics में अभ्यास पूर्ण हुआ। सन् १९७७ में काकाजी दूसरीबार अमरिका आये थे तब हम केनेडा गये थे। DuPong नामक व्यक्ति कुंडलिनी जाग्रत करता था। काकाजी उनसे मिलने गये थे। तो उन्होंने काकाजी को तीसरे विश्वंयुद्ध के बारे में पूछा था। तो काकाजीने कहा था कि जब तक मैं जिंदा हूँ तब तक तीसरा विश्वयुद्ध नहीं आयेगा। तो ऐसे काकाजी हमारे अंदर के युद्ध को शांत करने के लिये सत्संग को आगे बढा रहे है। काकाजी का एक ही सिद्धांत था कि मैं प्रभु का हूँ, प्रभु मेरे है। हम भगवान की तरफ रहेंगे और जगत की तरफ नहीं जायेंगे तो आध्यात्मिक प्रगति होगी। भगवान स्वामिनारायण और अक्षरपुरुषोत्तम ये दोनों तत्व ही सबसे बडे है। भक्तसहित भगवान की साधना करेंगे तो अक्षरपुरुषोत्तम उपासना दृढ होगी। जैसा परब्रह्म तत्व है और जैसा अक्षरतत्व है वैसे तीसरा मुक्त तत्व है। तो हमारा निशान मुक्त बनना यानि ब्रह्मरुप होना है। ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करना है। तो सामनेवाले में हम दोष न देंखे और केवल उसके गुण ही देंखे। हम सभीमें सकारात्मकता के गुण ही देंखे वही प्रार्थना।

इस उपलक्ष्य में पवई मंडल द्वारा रचित भजन 'महिमा तेरा कैसे कहूँ मैं काका...' प्रस्तुत हुआ।







संचालन में प.भ. अंकिताबहन लाडने तथा विशिष्टरुप से प.भ. एकताबहन और निष्ठाबहनने French भाषा में संचालन करके सभीका राजीपा प्राप्त किया।





Guruhari Kakaji Maharaj 108th Pragatya Din celebration, Paris







प.भ. परीक्षितभाई मोदी द्वारा काकाजी के प्रसंगो पर लिखी गई पुस्तक "108 Lamps of a Gunatit Life' का अनावरण संतभाईयों द्वारा हुआ।

अंत में हार विधि के बाद काकाजी के प्रागट्य निमित्त केक कटिंग हुआ।

पूरे समैया की व्यवस्था तथा अन्य कार्य प.भ. अंकुरभाई-प.भ. वर्षाबहन और प.भ. जस्मीनभाई की निगरानी में हुई। मुंबई से मननदास, संकेतदास, आनंददासने महापूजा से लेकर समैया की अन्य सेवा अच्छे से सँभाली।





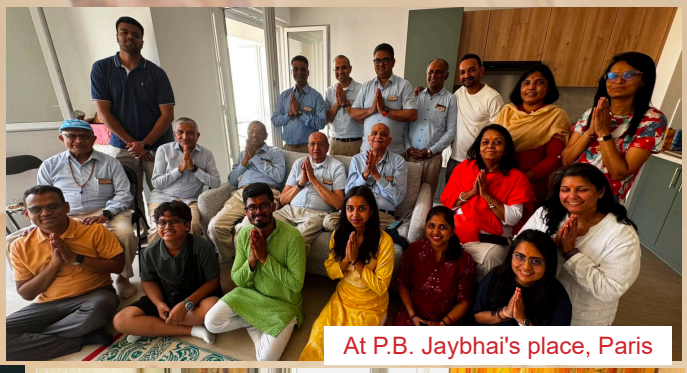
P.P. Vashibhai's Pragatya Din celebration, Paris



With CA P. Pravinchandra Govindji, Paris



At P.B. Rakeshbhai's place, Paris



At P.B. Jaybhai's place, Paris



At P.B. Balwantrai's place, Paris



At P.B. Harshadbhai's place, Paris



At P.B. Jasminbhai's place, Paris



At P.B. Bhikhubhai's place, Paris



Visit to Normandy Beach, Paris



Visit to Effiel Tower, Paris

दि. २६ जुलाई को ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी का स्मृतिदिन, प.पू. वशीभाई का प्रागट्यदिन तथा गुरुपूर्णिमा पर्व Le Blanc Mensil के Royal Garden Restaurant में भक्तिभाव के साथ मनाया गया। जिसमें पू. विराटभाई, प.भ. जयभाई, प.भ. नीलभाई मुनशी, प.भ. प्रवीणभाई लाडने वशीभाई के गुणों का दर्शन कराया। प.पू. दिनकरभाई और प.पू. भरतभाई के आशीर्वचन के बाद प.पू. वशीभाई के विशिष्ट आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए। अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग भी हुई। उसके बाद संतभाईयों तथा संतबहनोंने पेरिस के कईं हरिभक्तों के घर पधरामणी कर सत्संग किया।

❊ बुधवार, दि. २९ जुलाई को गुरुपूर्णिमा पर्व 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में अत्यंत श्रद्धा और भक्तिभाव से दीपप्रागट्य के साथ मनाई गई। सुबह में प.पू. भरतभाईने महापूजा में विशिष्ट संकल्प किया और सभी की सुखाकारी के लिये एवम् पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य हेतु खास प्रार्थना की।

शाम को सभा के प्रारंभ में प.भ. हेमंतभाई मर्चन्ट, प.भ. घनश्यामभाई कोठारी, प.भ. निरंजनभाई जहागीरदार, पू. संकेतदास और पू. माधुरीबहनने गुरुपूर्णिमा का महत्व स्वानुभाव के प्रसंगो से बताया।

पू. राजुभाई ने कहा कि गुरुपूर्णिमा और गुरु का प्रागट्य यह सबसे बडा दिन होता है। हमें गुरु मिल गये है इसलिये हम सुखी है। आंतरिक पीडा गुरु के सानिध्य से टल जाती है। स्वामी के सहित भजन करेंगे तो नारायण का महिमा समझ पायेंगे। गुरुहरि काकाजीने शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की सच्ची पहचान कराके हमें सुखी कर दिया। उन स्वरुपोंने बहुत सहन किया इसलिये आज हम सुखपाल में सत्संग कर पा रहे है। गुरु में मनुष्यभाव बिलकुल मत लाना। किसीके अभाव-अवगुण में जाना यानि गुरु का द्रोह किया ऐसा कह सकते है। चार्तुमास में जो नियम बतायें है उसमें अहो! गाथा गुणातीत विभुनी... गुरुहरि काकाजी के जीवनचरित्र का पठन अवश्य करना चाहिए। हम हर हफ्ते मंदिर आ नहीं सकते, लेकिन महिने में एकबार गुरु के दर्शन करने जरुर आये। सभीको गुरु का सच्चा राजीपा प्राप्त हो वही प्रार्थना।

GuruPurnima celebration at "Akshardham" Temple, Powai





प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज देश-काल-संग-शास्त्र-मंत्र-दीक्षा-देवता-ध्यान यह आठ देशकाल में भी हम सत्संग कर पा रहे है। आज भजन करने के लिये हम सक्षम है। तो आज के शुभ समय में जितना हो सके उतनी ज्यादा प्रभु की भक्ति कर लेनी चाहिए। २४ घंटे हम भजन में नहीं बैठ सकते, लेकिन जब भी समय मिले तब भजन कर लेना चाहिए। मंत्र, तंत्र और यंत्र ये तीन चीज काम करते है। यंत्र का Code मंत्र है, तंत्र यानि तांत्रिक विद्या - ऐसे तंत्र की Technique को समझेंगे तो नुकसान से बच पायेंगे। ये तीनों चीज हमारे पास है इसलिये अक्षरधाम पहुँचना सरल हो गया है। तो यंत्र यानि महापूजा, उसका Code यानि मंत्र, तंत्र यानि गुणातीत संत। गुरु हमें ज्ञान प्रदान करते है। अंधकार में से बाहर निकालते है। सच्चा गुरु मिलना सरल नहीं होता। आज हम यहाँ बैठे है उससे यह बात साबित होती है कि हमें सच्चे गुरु मिल गये है। हमारा ८०% काम हो गया है, अब २०% पूर्ण करने के लिये हमें तीन बात दृढ करनी है। **(१)** दिव्य दृष्टि - हमारे गुरु हमें दिव्य दृष्टि देते है। काकाजी संतों को पूछते थे कि आप



हरिप्रसादस्वामीजी को संपूर्ण मानकर जीवन जीते हो? तो आपने स्वामीजी का प्रागट्यदिन मनाया। आगे बढने के लिये Positive दृष्टि रखनी जरुरी है। आज गुरुदक्षिणा के रुप में हमारे अंदर की नकारात्मकता को खत्म करके सकारात्मकता के विचार दृढ करने का वचन गुरु को देना है। जितना इस बात को पकड के रखेंगे उतनी ज्यादा हमारी प्रगति होगी। **(२)** ज्ञानस्वरुपी विचार - माहात्म्य का विचार रखना। हम क्या करने आये है और क्या कर रहे है, वो हरपल सोचना चाहिए। अंधेरे में प्रकाश लाने का काम गुरु करता है, लेकिन चलना तो हमको ही है। लंडन AUM Cremetorium समैया में जो ड्रामा हुआ उसका विषय 'भजन करते करते क्रिया करो' था। इस समैया का आयोजन कितनी बार केन्सल करना पडा, फिर भी साहेबजीने सभीको भजन करने की प्रेरणा दी। ऐसी दिव्य दृष्टि, विचार गुरु देते है। **(३)** वचन - आज हमें गुरु को वचन देना है कि हम हररोज आधा घंटा धुन करेंगे। कभी ऐसी धुन करनी हो तो मेरे पास आना, मैं उसकी बहुत सारी **Methods** बताऊँगा। आँख खोलने की भी जरुरत नहीं पडेगी, ऐसी धुन दृढ हो जायेगी। काकाजीने तो भजन करने की बहुत सारी Techniques दी है। आज्ञापालन, अनुवृत्ति और अभिप्राय ये तीन चरण होते है। कुछ भी अशक्य नहीं है। हररोज अच्छा सत्कर्म करना है। कोई भी अपेक्षा रखें बिना सामनेवाले को सहायरुप होना चाहिए। लायब्रेरी में अनेको पुस्तक है वो सब शायद हम पढ भी लें लेकिन उससे भी अधिक गुरु के वचन का पालन करेंगे तो सबकुछ सिद्ध हो जायेगा। तो यह तीन बातें हम जीवन में दृढ कर ले वही प्रार्थना।

पेरिस से **प.पू. वशीभाई ने** आशीष देते हुए कहा कि आज के दिन हर कोई अपना भाव गुरु के चरणों में रखते है। सच्ची प्यास होगी तो गुरु जरुर मिलता है। गुरु को पूर्णरुप से समर्पित हो जाना है। नम्रता, सेवाभावना हमारे अंदर बढाना है। गुरु के गुण हमारे अंदर आने चाहिए। एकलव्यने गुरुदक्षिणा में अपना अंगूठा दे दिया जो सबसे बडा समर्पण है। गुरु को राजी करने के लिये तीव्र अभीप्सा होनी चाहिए। गुणातीतानंदस्वामी की आज्ञा का पालन करने भगतजी महाराजने अपना देह तक गिना नहीं। गुरुहरि काकाजी की तो क्या बात करें? हमें हमारा स्वभाव गुरु को दक्षिणा में दे देना है। तो ऐसे हमें जो प्रगट गुरु मिले है उन्हें हम राजी कर ले वही प्रार्थना।



GuruPurnima at Chicago

पेरिस से **प.पू. दिनकरभाई ने** अपने आशीष में गुरुहरि काकाजीने पत्रसंजीवनी में दि. २१ जून, सन् १९८३ में लंडन से गुरुपूर्णिमा का जो पत्र लिखा था उसका पठन किया।

साथ ही हिंडोला के पावन अवसर निमित्त विशिष्ट हिंडोला के सभीको दर्शन हुए।



Hindola at Powai Temple

Citation presented to SantBhagwant Sahebji

II Swamishriji II



Date: 15th July 2026

We, the Saints, Saint Brothers, Saint Sisters and devotees of Yogi Divine Society, Mumbai, Delhi and Chicago express our heartiest congratulations, regards and prayers to Guruhari SantBhagwant Sahebdada, Saint Brothers, Saint Sisters, devotees and entire Anoopam Mission family… On the auspicious occasion of the Inauguration of the AUM Crematorium – Europe's first Hindu, Jain, and Sikh faith-based crematorium.

We have always been astonished by, and deeply cherish, the miraculous and farsighted vision of **Guruhari Kakaji Maharaj**. Long before others could perceive its significance, Kakaji Maharaj envisioned a spiritual revolution that would touch countless lives. Who could have imagined that in 1973, when Kakaji introduced **Sant Bhagwant Sahebji** to the satsang fraternity of UK and again in 1982 he insisted on acquiring the land in Denham, UK, it would one day become the foundation of such a historic and transformative spiritual landmark? Many felt as though Yogiji Maharaj Himself was inspiring this divine decision through Kakaji Maharaj and the rest is history.

Under the divine guidance of SantBhagwant Sahebdada, Anoopam Mission has not only fulfilled the dream of establishing a magnificent mandir in the UK but has also nurtured an extraordinary family of dedicated devotees whose devotion, sacrifices, and tireless efforts have made this noble vision a reality.

The AUM Crematorium is far more than a cremation facility; it is a sacred place of dignity, peace, faith, and spiritual solace. During life's most difficult moments, families will find comfort, strength, solace and serenity in an environment rooted in timeless spiritual values. Here, prayers will soothe grieving hearts, faith will inspire acceptance, and sacred rituals will help loved ones bid farewell with reverence and peace.

This remarkable initiative will serve not only the Swaminarayan Sampraday but the entire Hindu, Jain, and Sikh communities for generations to come. Countless families will be grateful for a place where spiritual traditions are preserved, where final rites are performed with sanctity, and where mourners can experience inner peace amidst loss.

Future generations will undoubtedly remember and cherish this visionary contribution to society. It stands as a shining example of selfless service, compassion, and spiritual leadership.

We are immensely proud and grateful to **Anoopam Mission, SantBhagwant Sahebdada, the saints like unique Sadhuram P.P. Ashwindada, P.P. Himmat Swamiji, P.B. Satishbhai Chatwaniji, P.B. Vinubhai Nakarja, volunteers, donors and devotees** whose collective efforts have made this miracle possible.

May this sacred place continue to offer peace to the departed, strength to the bereaved, and inspiration to all who enter its doors.

It will be also a significant event that the Pragatya Din of P.P. Ashwindada, the world president of Anoopam Mission and that of P.P. Himmat Swamiji, head of Aoopam Mission (UK) will also be celebrated along with it.

It was also a moment of great pride and fulfilment that the present **Head of BAPS HH Mahant Swamiji** appreciated this initiative by Anoopam Mission.

With heartfelt prayers and deepest gratitude,

Jay Swaminarayan from Sadhu Mukundjivandas (Guruji -Delhi), Dinkarbhai (Chicago), Bharatbhai, Vashibhai, Rajubhai, Ashwinbhai ("Akshardham" Swaminarayan Mandir, Powai-Mumbai) and all devotees.

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) P.P. Vashibhai's 74th Pragatya Din celebration at Megarugas Hall, Chadivali Powai on 4th July. Also celebrated at Sambhaji Nagar on 27th June. (2) Bhajan Sandhya on 7th July at Bharatiya Vidhya Bhavan, Mumbai. (3) Visit by P.P. Aanandidi and Saint Sisters at "Akshardham" Temple, Powai on 8th July. (4) Visit by P. Ileshbhai and P. Vijaybhai from Gunatit Prakash, Vidhyanagar at "Akshardham" Temple, Powai on 11th July. (5) Senior Citizens Preventive Helathcare Flu Shot Camp at "Akshardham" Temple, Powai on 12th July. (6) Distribution of Stationary Kits, School Bags, Toys and Plants to various villeges of Karjat on behalf of Yogi Divine Society, Sadbhav Foundation and Rotary Club on 18th July. (7) Aum Crematorium Inauguration at Denham, London on 15th July. Also visits to various devotees places by P.P. Dinkarbhai and Saint Brothers in UK. (8) School bags and Chocolates Distribution at Kalgam by Pragnya Prabodhini Trust on 21st July. (9) Gurusmruti Mahotsav Samuh Mahapooja and Guruhari Kakaji Maharaj's 108th Pragatya Din celebration on 23rd and 24th July in Paris. Also visits to various devotees places by P.P. Dinkarbhai and Saint Brothers in Paris. (10) Guru Purnima celebration on 29th July at "Akshardham" Temple, Powai. (11) Presentation of Citation to SantBhagwant Sahebji on Behalf of Yogi Divine Society Powai, Chicago and Delhi.

❋ ❋ ❋

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta